रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है..... ॐ पिताश्री 13/6/64

ओम् शांति। अब बच्चे जानते हैं, बच्चे किसको कहा जाता है– आत्माओं को कहेंगे। बाप ने समझाया है सारी दुनिया अल्फ को भूली हुई है। ए न हो तो बी–सी–डी से कुछ काम चल न सके। अल्फ न हो तो बे–पे–टे ऑर्फन लैग्वेज़ हो जाय, चल न सके। बाप को न समझा गोया समझो, कुछ नहीं समझा। अब बाप को कैसे समझा जाय जब तक बाप न आए? अब बच्चे जानते, अल्फ आया हुआ है। अल्फ को कोई नहीं जानते, बाकी तो बहुत जानते हैं। गायन भी है, बाप से एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अर्थात् स्वर्ग की बादशाही मिलती है; क्योंकि बाप है स्वर्ग का रचता। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति बाप से ही मिलती है, मनुष्य को मनुष्य से नहीं मिल सकती। बच्चे पैदा हुए, बल्कि गर्भ में भी रहे; सिर्फ मालूम नहीं पड़ता, बच्चा है या बच्ची है। बच्चा बाहर निकला, वारिस बन गया, सिर्फ मालूम होना चाहिए बच्चा है या बच्ची है। बच्चा पैदा हुआ और वारिस बन गया। पहले–2 जब कोई आते हैं, इनसे फार्म भराया जाता है कि आत्मा का बाप कौन है? कहा भी जाता है– जीव आत्मा, पुण्य आत्मा। ऐसा नहीं कहा जावेगा– जीव परमात्मा, पुण्य परमात्मा, पाप परमात्मा। नहीं। महात्मा, पुण्यआत्मा कहा जाता है। गाया भी जाता है– आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल.... तो ज़रूर परमात्मा को ही आना है दुःख से लिबरेट करने। तो पहले–2 कोई आए, उनको कैसे समझाया जाए; इसलिए फार्म भराया जाता है– तुम्हारी आत्मा का बाप कौन है? शरीर का बाप कौन है? दो चीज़ अलग–2 हैं– मैं और मेरा। मैं आत्मा, मेरा शरीर। अहम् का रहने का स्थान कहाँ है; इसलिए फार्म भराया जाता है। तुम्हारी आत्मा का बाप कौन है? ऐसे नहीं कहा जावेगा, परमात्मा का बाप कौन है? पहले–2 अल्फ को जानना है। वह है ट्रुथ, ज्ञान का सागर है। वह सबका बाप है। कोई भी मनुष्य, जज आदि कोई को भी पता न है कि हम आत्मा हैं। आत्मा इन शरीर के ऑरगन्स द्वारा कहती है, मैं जज हूँ, सर्जन हूँ। आत्म–अभिमानी एक बाप ही आकर बनाते हैं। अभी तुम जानते हो, हम आत्मा है, बाकी यह सब शरीर के सम्बन्ध हैं। शारीरिक सम्बन्ध में भी यह माँ, यह बाप लगते हैं। आत्मिक संबंध में भाई–2 हैं। पहले तो यह समझना है, गाया जाता है सेकण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा। जीवनमुक्ति कौन देने वाला है, वह भी समझना पड़े न! सतयुग में है जीवनमुक्ति, कलहयुग में है जीवनबंध। तो यहाँ फार्म भराने का कायदा बड़ा अच्छा है। आत्मा का बाप कौन है? बाप तो है ट्रुथ, सचखंड स्थापन करने वाला। तुम बच्चे जानते हो, हम आत्माओं के बाप का यहाँ यह यादगार है। वह निराकार हम आत्माओं का बाप है। हम साकार हैं। निराकार का भी यादगार, ज़रूर आया होगा न पतित को पावन बनाने व पुरानी को नई बनाने। दुनिया नई से फिर पुरानी होती है। दुनिया एक ही है। ज़रूर दुनिया का रचता एक होगा, दो हो नहीं सकते। गॉड इज़ क्रियेटर। फादर रचते हैं न दुनिया को, जो दुनिया इस समय पुरानी है। नई दुनिया अर्थात् भारत स्वर्ग था। गॉड इज़ वन, वर्ल्ड इज़ वन। सतयुग था, अब कलहयुग है। प्राचीन भारत था तो ज़रूर नई दुनिया रचने वाले ने भारत को नया बनाया है। पहले जब कोई आते हैं, उनको यह राज़ समझाना है– तुम आत्मा हो। आत्मा पुनर्जन्म लेती रहती है। बाप आकर देही–अभिमानी बनाते हैं। मैं जज हूँ, बैरिस्टर हूँ अथवा मैं क्रिश्चियन धर्म का हूँ– यह सब शारीरिक धर्म हैं। आत्मा अशरीरी है तो कोई संबंध नहीं है, कोई धर्म नहीं। आत्मा अलग कर्मातीत हो जाती है, फिर नए सिर माँ–बाप आदि संबंध बनते हैं। चोला बदला, पार्ट बदला, माँ–बाप सब नए बन जाते। आत्माएँ पुनर्जन्म लेती रहती हैं। वास्तव में आत्मा निराकार है, निराकारी दुनिया में रहती है, फिर आत्मा जब शरीर धारण करती है तो कहते हैं– यह मेरा नाम–रूप है। अब बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं– तुम अपन को आत्मा समझो। तुमको वापिस जाना है।

तुमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया। तुम बैरिस्टर बने, राजा बने, अब फिर तुम विश्व का मालिक बनेंगे। आत्माओं से बात प०पि०प० ही कर सकते हैं। यह बातें कोई की भी बुद्धि में नहीं है। वह तो कह देते, आत्मा सो परमात्मा है। बाप आकर सृष्टि के चक्कर का राज़ समझाते हैं। सर्वव्यापी कहने से तो कोई अर्थ ही नहीं निकलता। गाते हैं– तुम मात–पिता.... फिर सर्वव्यापी कैसे हो सकता! वह सिर्फ गाते रहते, मिलता कुछ भी नहीं। अभी तुम जानते हो, बरोबर हमने 84 जन्मों का चक्कर लगाया है। अच्छा, यह भी बात छोड़ो, बाप के बच्चे तो हो न! पहले–2 अल्फ को जानना चाहिए। हम बाप के पास थे मुक्तिधाम में, अभी कोशिश भी मुक्तिधाम में जाने की करते हैं। हम आत्मा असुल मुक्तिधाम की रहवासी हैं; परन्तु देह–अभिमानी होने कारण जानते नहीं हैं। हम आत्मा निराकारी दुनिया में रहने वाली हैं। यह शरीर यहाँ 5 तत्व से बनता है। आत्मा तो 5 तत्व से नहीं बनती। आत्मा बाप के पास रहती है, वहाँ से आई है पार्ट बजाने। अब भक्त भगवान को याद करते हैं। भगवान के पास जाने लिए साधु–संत आदि सब याद करते हैं, मुक्ति के लिए गंगा स्नान करने जाते हैं; परन्तु वापिस निर्वाणधाम कोई जाय नहीं सकते। पहले–2 यह समझाना है, आत्मा और शरीर दो चीज़ हैं। आत्मा में मन–बुद्धि है, चेतन है। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। सब आत्माओं का वह बाप निराकार प०पि०प० है, नॉलेजफुल है। उनको ही गीता का भगवान कहा जावेगा। सब भक्तों का प्यारा है, प्यार का सागर है। भक्तों को कितना खींचते हैं! भगवान तो एक होना चाहिए। इतने सब भक्त हैं, सभी पतित हैं। पतित–पावन को याद करते हैं तो ज़रूर एक निराकार होगा न! बाकी सब इनकी रचना हैं। ब्र०वि०शं० भी रचना हैं। मनुष्य सृष्टि भी रचना है। ऊँच ते ऊँच बाप है। वहाँ का रहने वाला है। जैसे आत्मा स्टार है, प०पि०प० भी स्टार है। बच्चों को समझाया है, वर्ल्ड भी एक है, इनको रिपीट करना है। जो भी धर्म, सबको चक्कर लगाना है। सब एक्टर पार्टधारी हैं, कोई का भी पार्ट नहीं बदल सकता। तो पहले–2 पार्ट बजाना बहुत ज़रूरी है। आत्मा का बाप कौन है? कहते हो, ''ओह गॉड फादर''। यह किसने कहा? आत्मा शरीर द्वारा बोलती है। शरीर का बाप तो है, आत्मा का बाप है प०पि०प०। पहले–2 मुख्य यह बात है। कोई से जास्ती डिबेट आदि न करनी है। विद्वान–पंडित बड़े मजबूत होते हैं, सर्वव्यापी की बात पर थकाए देंगे; परन्तु जास्ती डिबेट करने की बात नहीं है। है ही सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। बाप से बच्चे पैदा होते हैं, न कि बच्चे से बाप पैदा होता है। जब बाप है तब तो बच्चे पैदा करे। यह बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, तुम देही–अभिमानी बनो। इस समय यह पतित दुनिया है, तब ही कहा जाता है– देही–अभिमानी बनो। गॉड फादर को न जानने कारण ऑर्फन बन पड़े हैं। सतयुग में तो देही–अभिमानी की बात नहीं, वहाँ तो वह प्रालब्ध भोगते हैं, बाप को याद करने की कोई दरकार नहीं। दुनिया को यह पता नहीं कि भारतवासियों को बाप से प्रालब्ध मिलती है। भारत स्वर्ग बन जाता है। नर्क बनाने वाली है माया (रावण)। भारत को नए से फिर पुराना होना ही है। समझो, मकान की आयु 100 वर्ष होगी, तो 50 वर्ष बाद पुराना कहेंगे। वैसे यह दुनिया नई से पुरानी बनती है। फिर नई कौन बनावेंगे? रिपीट कैसे होगा? दुनिया पावन थी, किसने बनाया होगा न! पतित–पावन एक ही बाप है। वही पावन बनावेंगे। पतित कौन बनाते हैं, पावन कौन बनाते हैं– यह कोई भी समझ नहीं सकते। .... बाप के बने हो। बाप माना बाप। बाप को आधा व तीन चौथाई थोड़े ही माना जाता; परन्तु माया बाप को भुलाए फिर देह–अभिमान में ले आती है। मेहनत सारी इसमें है। अशरीरी बन बाप को याद करना है, नहीं तो माया बड़ी दुश्मन है। याद के बल से ही तुम राज लेते हो, याद द्वारा बाप से वर्सा पाते हो। याद का ही बल है। बाप कहते हैं, देह सहित सभी संबंधों को भूल मेरे को याद करो; क्योंकि मेरे पास वापिस आना है। सतयुग है जीवनमुक्ति, कलहयुग है जीवनबंध। पाँच विकारों रूपी रावण का बंधन है। वहाँ यह होता नहीं

(अधूरी मुरली)